(IJPS) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

काव्यों में काव्यादर्श और भाषा –सौश्ठव

डॉ नीरज कुमारी

सह . आचार्य, संस्कृत विभाग, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, भारत

POETIC IDEALS AND LANGUAGE-CULTURE IN POEMS

Dr. Neeraj Kumari

Associate Professor, Sanskrit Department

Thakur Biri Singh Degree College Tundla, Firozabad, India

ABSTRACT

The expression of poet's feelings is called 'poetry' and language is its medium. It is through the medium of language that the poet gives the form of poetry to his feelings. That's why 'language' is the main medium of poetic expression. From the point of view of language configuration, after discussing the subject song compositions, it is known that all the lyricists have had an extraordinary command over the language. They are able to freely express their feelings within the language. Flow, rhyme, music, lyrical, soft and beautiful word-composition ets characteristics are visible everywhere in their work. If this speciality of his language is reflected in his compositions, then we find that the lyricists have worked tirelessly and used both language and emotion in their songs.

सारांश

*कवि की भावनाओं की अभिव्यक्ति का नाम ही **'काव्य'** है और भाषा उसका माध्यम है। भाषा के माध्यम से ही कवि अपनी भावनाओं को काव्य का रूप प्रदान करता है। इसलिए काव्याभिव्यक्ति का प्रमुख साधन **'भाषा'** ही है। भाषा विन्यास की दृष्टि से अध्येय गीत रचनाओं पर विचार–विमर्श करने पर पता चलता है कि सभी गीतकारों का भाषा पर असाधारण अधिकार रहा है। वे अपने भावों को भाषा के भीतर स्वेच्छया अभिव्यक्त करने में समर्थ हैं। प्रवाह, आनुप्रासिकता, संगीत, लयात्मकता, कोमल एवं सुन्दर शब्द–विन्यास आदि विशेषतायें इनकी कृतियों में सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। उनकी इन भाषागत विशिष्टताओं*

को यदि उनकी रचनाओं में घटित किया जाये तो हम पाते हैं कि गीतकारों ने अपने गीतों में भाषा एवं भाव दोनों ही दृष्टियों से अथक् परिश्रम किया है

परिचय

*काव्य की दीपिका, भाषा का काव्य में वहीं महत्त्व है जो मानव–शरीर में शारीरिक अवयवों का है। मानव अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिस सार्थक मौखिक साधन को अपनाता है, वह भाषा है। यद्यपि संकेत आदि के द्वारा भी कुछ भावों को अभिव्यक्ति हो जाती है, परन्तु अपने भावों को सूक्ष्म और स्पष्ट रूप में व्यक्त करने के लिए हमें भाषा की आवश्यकता पड़ती है। मनन, चिन्तन और विचार का साधन भी भाषा ही है। यह दिव्य ज्योति ही समस्त संसार में अपना प्रकाश फैलाये हुए है। **'काव्यादर्श'** नामक ग्रन्थ में भी भाषा की महत्ता का वर्णन किया गया है कि यदि यह भाषारूपी ज्योति न होती तो इसके बिना संसार घोर अंधकारमय होता।*

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारा न्न दीप्यते।।

भाव प्रसङ्गानुरूप

*आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री जी की भाषा सर्वथा भाव–प्रसङ्गानुवर्तनी है। वे यथायोग्य भावों को तथा प्रसंगों के अनुरूप अपनी भाषा को परिवर्तित कर लेते हैं। वे सहज ही सुन्दर एवं ललित रूप में अभिव्यक्त करने की चित्ताह्लादक सामर्थ्य रखते हैं। जहाँ श्रृङ्गार के प्रसंग में कोमल कमनीय वर्णों से रमणीयता का सृजन करते हैं, वहीं वीर और रौद्र रस के वर्णन में कठोर वर्णों के प्रयोग से चित्त को तोष प्रदान करते हैं। **'काकली'** गीतरचना के **'प्रभात सौन्दर्यम्'** नामक गीत में गीतकार द्वारा भाव–प्रसङ्गानुरूप भाषा का प्रयोग किया गया है, जो प्रस्तुत पंक्तियों में इस प्रकार उल्लिखित है–*

विकसति कमलं विलसति सलिलं

पवनो वहति सलीलम्।

दिशि दिशि धावति कूजति नृत्यति

(IJPS) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

खगकुलमतिशयलोलम् ।।

यह गीत प्रभातकालीन सूर्य के प्रभाव से प्रभासित वातावरण का निरूपण करता है। कवि ने इसमें सूर्य के उदय की क्रमिक रेखा खींची है। सूर्य उदित हो रहा है। अन्धकार फटा जा रहा है। ओह ! यह संसार कितना सुन्दर लग रहा है। चारों चतुर्भ्रमरों का समूह विचरण कर रहा है। अविराम गुंजन मन को मोह रहा है। कमल विकसित हो रहे हैं। जल शोभित हो रहा है और वायु लीलापूर्वक वह रही है। पक्षियों का समूह अत्यधिक चंचलता के साथ दिशा–दिशा में दौड़ रहा है, कूज रहा है, नृत्य कर रहा है। इस प्रकार प्रभातकालीन वर्णन भी गीतकार के भावों के साथ–साथ भाषा भी साम्य रखती है।

*आचार्य परमानन्द शास्त्री जी की गीत कृति **'परिदेवनम्'** में भी भावों के अनुकूल ही शब्दों का चयन किया गया है। यह एक शोकगीति है जिसमें गीतकार द्वारा भावों के अनुसार ही कारुणिक अभिव्यक्ति की गई है जो प्रस्तुत गीत में इस प्रकार उल्लिखित है–*

तदमङ्गलमिन्दिराऽश्रणो–

दधृदि निस्त्रिंशनिपातकृन्तनम् ।

व्यसने मनसः प्रमन्थने

धृतिमाप श्रुतधीरया धिया ।।

युवा नेता संजय गाँधी की अकालकबलित मृत्यु हो जाने पर जब मृत्यु का समाचार परिवारीजनों को मिला, तो हृदय को क्रूर आघात प्रदान करने के समान वह अमङ्गल सुनकर माता इन्दिरा ने मन को झकझोर देने वाले इस घोर संकट में उन्होंने अपनी धीर गम्भीर बुद्धि से ही धैर्य को प्राप्त किया। अतः भावानुसार सदृश भाषा का ही प्रयोग किया गया है।

*उसी प्रकार जीवन के अनुभवों के विषय का वर्णन, डॉ. जनार्दन प्रसाद पाण्डेय **'मणि'** ने **'रागिणी'** नामक गीतिसंग्रह में सरल भाषा में किया है जो इस प्रकार है–*

(IJPS) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

भिन्नेऽनुरागहर्म्ये कं श्रावयामि गीतिम् !

छिन्नेऽनुभूतिधर्मे किं वर्णयाम्यनीतिम् !!

हास्याय हन्त पीडा मे यद्यनन्यजानाम् !

तत्सौख्यशून्यसर्गे कस्मै ब्रुवे प्रतीतिम् !!

अर्थात् अनुराग रूपी महल से भिन्न होने पर मैं अपना गीत किसे सुनाऊँ अर्थात् जहाँ प्रेम ही नहीं है, वहाँ भला मेरा गीत कौन सुनेगा ? जहाँ धर्म की अनुभूति ही नहीं है, वह नष्ट हो चुकी है, तो वहाँ मैं किसे नीति का पाठ सुनाऊँ ? जो अन्य लोग हैं उनके सामने तो मेरी पीड़ा हास्य का पात्र बनेगी। जब ये सृष्टि ही मेरे लिए सुख से शून्य हो गयी है तो मैं अपने मन की व्यथा किससे कहूँ ? इस प्रकार गीतकार की भावाभिव्यक्ति भाषा के अनुरूप ही अभिव्यक्त हुई है।

सुन्दर शब्द चयन

*अर्वाचीन संस्कृत गीतकारों द्वारा भाषा को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हुए सुन्दर शब्दों का चयन किया गया है। इस प्रकार आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री की भाषा लालित्य प्रधान है। उनके शब्द मानो सौन्दर्य की सहज सृष्टि करते हैं। उनके भाव और शब्दों को ललित सम्मिलन वर्ण्य–विषय को इस प्रवणता प्रदान करता है। **'काकली'** नामक गीतिसंग्रह से एक उदाहरण प्रस्तुत है–*

ध्वान्तं हर मे हृदि संक्रान्तम्।

त्वां विहाय विदधाति समरसं

को जीवनमुद्भ्रान्तम्।।

तरलतरङ्गां त्रिपथगङ्गां।

वहसि तूत्तमाङ्गेन

क्षालय कायालयकल्मषमयि

कुरु मे स्वान्तं शान्तम्।

(IJPS) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

प्रस्तुत गीत में भगवान् शिव की महिमा का वर्णन करते हुए कल्याण के निमित्त उनसे प्रार्थना की गई है कि हे भगवान् शिव ! मेरे हृदय के अन्धकार को आप दूर करें। आप के अतिरिक्त भला ऐसा संक्रान्त कौन है जो अद्भ्रान्त जीवन को समरस करता है ? तरल–तरङ्गों वाली त्रिपथगामिनी गंगा को आप अपने सिर पर धारण करते हो। हे प्रभु ! पाप से पूर्ण मेरे अन्तःकरण को आप इस गंगाजल से धोकर मुझे शान्ति प्रदान करें।

*इस प्रकार प्रस्तुत गीत में भगवान शिव के लिए **'संक्रान्तम्', 'उद्भ्रान्तम्'** इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया गया है और गंगा के लिए **'त्रिपथगङ्गां'** जैसे विशेषण का प्रयोग किया गया है, जिससे भाषा को नवीनता प्राप्त हुई है।*

*आचार्य जनार्दन प्रसाद पाण्डेय **'मणि'** द्वारा रचित **'निस्यन्दिनी'** गीत संग्रह में **'श्रृणुकल्पने'** नामक गीत में सुन्दर शब्दों का चयन कर भाषा को सजीवता प्रदान की गयी है, उसका एक उदाहरण इस प्रकार निरूपित है–*

अयि रञ्जने श्रृणु कल्पने ! त्वं लाऽयिष्यसि वा न वा।

विश्वम्भरार्चितचन्दने ! त्वं राजयिष्यसि वा न वा।।

किं नैव पश्यसि पश्य वै त्वं स्वयिषि नैव रोचते

सुप्तोप्यहं कथमुत्थितस्त्वं कथं क्लाम्यसि श्रृम्भसे

अयि वन्दने श्रृणु कल्पने ! त्वं जागरिष्यसि वा न वा।

अयि रञ्जने श्रृणु कल्पने ! त्वं लाडयिप्यसि वा न वा ।।

*प्रस्तुत गीत में कविता की कल्पना एक नायिका से की गयी है। उसकी प्रशंसा में विभिन्न विशेषणों का प्रयोग किया गया है, यथा–**कल्पने, चन्दने, लाडयिष्यसि, राजयिष्यसि, जागरिष्यसि, लाडयिष्यसि** इत्यादि। इस प्रकार गीत में सुन्दर शब्दों का प्रयोग किया गया है।*

*डॉ. हरिदत्त शर्मा विरचित गीत संग्रह **'नवेक्षिका'** में भी गीतकार द्वारा सरल एवं सहज शब्दों द्वारा भाषा को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है, जो प्रस्तुत उदाहरण में इस प्रकार उल्लिखित है–*

(IJPS) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

मतपत्राणां भवतु लुण्टनं बलात् पेटिकाहरणम्।

स्वजयो भवतु रक्तपातैर्वा भवतु जनानां मरणम्।।

× × ×

मधुरमोहाकाश्वासनदानैः मुग्धजनान् भ्रमयन्ति रे।

लोकहितं परिहाय नायकाः किं किं न हि कुर्वन्ति रे ।।

लोगों द्वारा जो मतदान किया जाता है उसे लूट ले जाते हैं, जिस पेटिका में मतपत्र रखे जाते हैं, उसी की चोरी कर लेते हैं, स्वयं की विजय प्राप्ति के लिए लोगों की सेवा के स्थान पर हत्या तक कर देते हैं। मधुर–मोहक एवं असत्य अर्थात् झूठे आश्वासन देकर लोगों को भ्रमित करते हैं और ये दुष्ट नेता लोकहित को छोड़कर न जाने क्या–क्या नहीं करते हैं ? इस प्रकार ***'लुण्टनं', 'पेटिकाहरणम्'*** *आदि शब्दों द्वारा गीति में भावों को सरल भाषा में गठित किया गया है।*

आचार्य विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र ***'विनय'*** *कृत* ***'सारस्वतसमुन्मेषः'*** *में भी शब्दों का चयन भावानुकूल ही किया गया है।* ***'क्षणिका'*** *नामक गीत से एक उदाहरण इस प्रकार है–*

जीवनमस्ति पिपासा।

धर्मतप्तसिकता सुधावनं

मेहमरुस्थलवनं प्रतिवनं,

परतो हन्त ! हताशा,

सत्यं जीवनमस्ति पिपासा ।।

यहाँ पिपासा का प्रतीकात्मक, रूप में प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है– ***'इच्छा'****। जीवन में अनेक इच्छायें हैं और यदि इन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती तो वे हताश कर देती हैं। अतः सत्य है जीवन एक पिपासा है।*

(IJPS) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

सन्दर्भ

1. *भाति मे भारतम् – पृष्ठ सं. 12*
2. *तदेव गगनं सैव धरा – पृष्ठ सं. 119*
3. *भाति मे भारतम् – पृष्ठ सं. 20*
4. *काव्यादर्श – 1/4*
5. *परिदेवनम् – पृष्ठ सं. 3*
6. *रागिणी– पृष्ठ सं. 40*
7. *काकली– पृष्ठ सं. 5*
8. *निस्यन्दिनी – पृष्ठ सं. 32*
9. *नवेक्षिका – पृष्ठ सं. 33*
10. *सारस्वतसमुन्मेषः– पृष्ठ सं. 15*

REFERENCES

1. Bhati me Bharatam, pg 12
2. Tadaiva Gaganan Saiv Dhara, pg 119
3. Bhati me Bharatam, pg 20
4. Kavyadarsh, ¼
5. Paridevnam, pg 3
6. Ragini, pg 40
7. Kakli, pg 5
8. Nisyandini, pg 32
9. Navekshika, pg 33
10. Saraswatsamunmeshah, pg 15